भगवान परशुराम चालीसा एवं स्तोत्र

(व्रत कथा विधि सहित)



आचार्य पण्डित डॉ. कृष्ण चंद्र शास्त्री

प्रकाशक

श्री विद्या साधना पीठ, बहादुरगढ़ (हरियाणा)

भगवान परशुराम चालीसा एवं स्तोत्र

(व्रत कथा विधि सहित)



आचार्य पण्डित डॉ. कृष्ण चंद्र शास्त्री

प्रकाशक
श्री विद्या साधना पीठ, बहादुरगढ़ (हरियाणा)

पुस्तक प्राप्ति स्थान--

* महर्षि वेदव्यास वेद विद्यालय एवं पुस्तकालय , भिवानी रोड़ जींद।

* पं पवन शर्मा,साधपट्टी नगूरां जींद।

* श्रीविद्यासाधनापीठ लाइनपार पटेलपार्क डिग्गीरोड़, बहादुरगढ़।
  MOB 9911314143

* पंचांग कार्यालय,डी-172 ए, माडल टाऊन एक्स.हिसार (हरियाणा)

* श्री ब्राह्मण संस्कृत महाविद्यालय रामराय (जींद)

मूल्य- ₹ ३० मात्र

SVSPBN - 2019-001

सम्पादकीय

भगवान् परशुराम के भक्तों के लिए " भगवान् परशुराम चालीसा", "शतनामस्तोत्र" व्रतविधि एवं मंत्रजपसाधना का उल्लेख इस ग्रन्थ में किया गया है ।आशा है कि श्रद्धालु पाठकों को प्रीतिकर लगेगा। इसके साथ साथ ग्रंथ में भगवान् परशुराम जी का जीवन परिचय तथा उनके बारे में गूढ़ रहस्यों का भी प्रतिपादन किया गया है। जो शास्त्र प्रेमियों को अभीष्ट है। ग्रंथ में काशीविद्वत्परिषद के अध्यक्ष श्री कामेश्वर उपाध्याय जी का लेख तथा अमृतवाग्भव विरचित परशुराम स्तोत्र भी पाठकों का विशेष मार्गदर्शन करेगा, ऐसी आशा है। काशीविद्वत्परिषद् के अध्यक्ष श्री कामेश्वर उपाध्याय जी तथा ब्राह्मण संस्कृत महाविद्यालय, रामराय के प्राचार्य श्री ज्ञानचन्द जी को अपनी शुभकामनाएं देने के लिए बहुत बहुत धन्यवाद ज्ञापित करता हूं।

तथा पूज्यपाद् गुरुदेव शंकराचार्य स्वामी श्री निश्चलानंद सरस्वती जी महाराज,पूज्यपाद् गुरुदेव स्वामी श्री मृगेंद्र सरस्वती जी महाराज (कांची कामकोटि पीठ जोधपुर शाखा), श्रीललिताम्बा पीठाधीश्वर पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री जयराम जी महाराज एवं पूज्य त्र्यम्बकेश्वर चैतन्य जी महाराज जी का पावन स्मरण इस अवसर पर अवश्यंभावी समझता हूं।

किसी भी त्रुटि या सुझाव के लिए अवश्य सूचित करें।इति शम्।

विदुषां वंशवद:

डा० कृष्ण चंद्र शास्त्री

श्रीविद्यासाधनापीठ, बहादुरगढ़ हरियाणा

भगवान परशुराम चालीसा

गुरुजन चरण पखार कर
चरणामृत करूं पान।
महिमा परशुधारी की
मन से करूं बखान।।

जयति जयति जै परशुधारी,पूरण परमपुरुष अवतारी।
ऋषि जमदग्नि के तुम प्यारे, रेणुका के आंख के तारे।

शिवशंकर से विद्या लीन्ही, दत्तात्रेय ने शक्ति दीन्ही।
विद्युदभी है परशु तुम्हारा,सारंग चाप लोक में न्यारा।
शास्त्र शस्त्र ज्ञान के दाता,भीष्म द्रौण के भाग्यविधाता
कार्तवीर्य संग करी लड़ाई,नृपाधम को मुक्ति दिलाई।
इक्कीस बार दुष्टों को मारा, पृथ्वी का सब भार उतारा
जो राजन भुवि धर्माचारी, तिनकी नहीं हानि बिचारी।
जो निरंकुश भुवि भूपाला,उनको काल गाल में घाला।
भूमंडल सब जीत लिया, फिर कश्यप को दान किया।
कुरुक्षेत्र पंचतीर्थ बनाया, पितरों का पिंडदान कराया।
रामह्रद में तर्पण किन्हा, पितरों को श्रद्धांजलि दीन्हा।
पंचभ्रात में लघुतम भ्राता, जिनसे तृप्त पिता व माता।
शिव दर्शन को गये कैलाशा, गुरुदर्शन की लेकर आशा
गणपति ने मार्ग नहीं दीन्हा,दंत तोड़ एकदंत किन्हा।
राम ने भंग किया जब चापा,सब नृप भए मन संतापा।
राम से मिलकर युद्ध की ठानी,सब भूपति भए अभिमानी।
मंगल मांही अमंगल भांपा,जनकराज का हृदय कांपा।
शंभूचाप का बहाना बनाए, परशुधारी स्वयंवर आए।
कहां क्रोधी क्षत्रगण भारी, कहां रघुपति बाल विचारी।
क्षत्री सो राम लखन भिड़ जाई, शगुन रंग में भंग पड़ जाई।
राम को राम परस्पर लखते,खुद की लीला खुद ही तकते।
प्रभु देख हुए नयन तर्पित,निजकला राम को किन्ही अर्पित।
गिरि महेंद्र पर किया प्रस्थाना,जप तप व्रत हेतू मन माना।

सागर से तप भूमि मांगी, सागर के उर अहं सी जागी।

देखि क्रोध में फरसा घुमाया, सागर को पीछे खिसकाया।

केरल का निर्माण किया,शठ जलधि को दंड दिया।
रावण को भी दिशा दिखाई, विप्र वध पर डांट लगाई।

श्रीविद्या के परम उपासक, विप्रकुलवंद्य चराचर शासक।

कल्पसूत्र का किया निर्माणा,श्रीविद्या का रहस्य बखाना।

त्रिपुरसुंदरी की सेवा किन्हीं,ब्रह्मतेज की विद्या लीन्ही।

नित भूमंडल परिक्रमा करते, भक्त जनों के संकट हरते।

कुरुक्षेत्र एक तीर्थ निराला,रामह्रद जगे तप की ज्वाला।

पूर्णिमा लगे मेला भारी,सब भक्तों पर दया तुम्हारी।

रामह्रद में स्नान जो करते,संकट को रेणूकासुत हरते।

स्नान ध्यान परिक्रमा लगावे, अनन्तकोटि यज्ञ फल पावै।

तीर्थ बसे जो एक संवत्सर, बाबा कृपा करें ता ऊपर।

हर पूर्णिमा बाबा आते,सच्चे भक्तजन दर्शन पाते।

चिरंजीवी है नाम तिहारा,निज भक्तन का सदा रखवारा।

पुत्र पौत्र धन धान्य विशाला,तुम्हरे भक्त रहे खुशहाला।

रोग दोष को दूर भगावे, सदा बाबा में ध्यान लगावे।

जो नित यह चालीसा गावे, कृष्ण कहें सदा सुख पावे।

आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा छिहत्तर दो हजार।

बैठा तेरे चरणों में कर दो बेड़ा पार।।   दो०

* इति शम्*

श्रीपरशुरामाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

पूज्य:पूर्ण: प्रदीप्तात्मा पूर्णेन्दु: प्रियभूषण:।

परब्रह्मस्वरूपश्च पराशुभविनाशक:।।१

पितृसंतोषकर्त्ता च पितृवचनपालक:।

पितृमानप्रदश्चैव पितृरिपुविघातक:।।२

पितृतर्पणसंतुष्ट: पंचस्यमन्तकव्रत:।

पितृमोक्षप्रदश्चैव पितृकुलप्रमोदक:।।३

पवित्र: पवन: पार: पुण्यापुण्यफलप्रद:।

पंक्तिपावननामापि पिनाकपाणि पाटल:।।४

पतितक्षत्रवंशघ्न: पिशुनकुलघातक:।

पितामह: पुरीजेता पशुपाशप्रभेदक:।।५

पयोव्रती प्रतापी च प्रतिनिधि: प्रसादन:।

पुरोहित: प्रसन्नात्मा पद्मार्चित: पुरन्धर:।।६

पश्यकेष्टप्रदाता च पृथ्विदानपरायण:।

पार्थिववृंदजिष्णुर्वा परब्रह्मस्वरूपक:।।७

पशुपति: प्रकृष्टश्च प्रभव: परमेश्वर:।

पुराण: पंडित: पूत: परमवीरतोषक:।।८

परन्तप: परीक्षित: परमपददायक:।

परसैन्यदलच्छेत्ता परशस्त्रास्त्रभेदक:।।९

प्रथितयशसामग्र्य: प्रथित: प्रणताश्रय:।

पाटलाक्ष: पुरोधा च पतितोद्धारकारक:।।१०

परशुराम: प्रख्यात: परासवविशोषक:।

पृथ्विक्रमणगन्तापि परयोधनतत्पर:।।११

पंचम: पद्मरेखावान् पक्ष्मल: परमेष्टद:।

प्रभु: पचपचस्तोता परिचय: पराक्रम:।।१२

पिता पंचमहायज्ञ: पद्यगद्यसुलेखक:।

प्रपंक्तिग्रीवदर्पघ्न: पंचानन: प्रतिष्ठित:।।१३

परिपक्व: प्रमाणज्ञ: प्रेमाकृष्ट: पुरातन:।

प्रणव: परिकांक्षित: पटु: पर्वतवेधक:।।१४

पृथ्विपति: परिख्यात: प्रगल्भ: परिकांक्षित:।

पंचविंशतितत्त्वज्ञ: पंचवल्कलभूषित:।।१५

पंचनीराजनप्रीत: पूतात्मा पुष्करेक्षण:।

प्रतिवादिमुखस्तम्भ: पराचितिप्रसादक:।।१६

पीताम्बर: परिज्ञानी परलोकहितावह:।

पाता पुरुषशार्दूल: प्रचंड: पार्वणप्रिय:।।१७

पिशंग: पूर्णिमापूज्य: प्रतिनिधि: पिशंगक: ।

पूज्यपूज्यस्य नामानि पापराशिहराणि च।।१८

अष्टोत्तरशतं जप्त्वा ब्रह्मलोके महीयते।।

इति हरियाणा प्रदेशे जयन्तपुरीमंडलान्तर्गत नगूरांग्रामवासिना
कृष्णचंद्रशास्त्रिणा विरचितं पकारादि
श्रीपरशुरामाष्टोत्तरनामस्तोत्रम्।

भगवान परशुराम जीवन चरित

पौरोणिक कथानुसार भगवान परशुराम जी का जन्म भृगुश्रेष्ठ महर्षि जमदग्नि के घर रेणुका के गर्भ से वैशाख शुक्ल तृतीया को हुआ था।वे भगवान विष्णु के छटे अवतार थे।

प्राचीन काल में कन्नौज में गाधि नाम के एक राजा राज्य करते थे। उनकी सत्यवती नाम की एक अत्यन्त रूपवती कन्या थी। राजा गाधि ने सत्यवती का विवाह भृगुनन्दन ऋचिक के साथ कर दिया। सत्यवती के विवाह के पश्चात् वहाँ भृगु ऋषि ने आकर अपनी पुत्रवधू को आशीर्वाद दिया और उससे वर माँगने के लिये कहा। इस पर सत्यवती ने श्वसुर को प्रसन्न देखकर उनसे अपनी माता के लिये एक पुत्र की याचना की। सत्यवती की याचना पर भृगु ऋषि ने उसे दो चरु पात्र देते हुये कहा कि जब तुम और तुम्हारी माता ऋतु स्नान कर चुकी हो तब तुम और तुम्हारी माँ पुत्र की इच्छा लेकर मेरे द्वारा दिये गये इन चरुओं का सावधानी के साथ अलग अलग सेवन कर लेना। इधर जब सत्यवती की माँ ने देखा कि भृगु ने अपनी पुत्रवधू को उत्तम सन्तान होने का चरु दिया है तो उसने अपने चरु को अपनी पुत्री के चरु के साथ बदल दिया। इस प्रकार सत्यवती ने अपनी माता वाले चरु का सेवन कर लिया।

योगशक्ति से भृगु को इस बात का ज्ञान हो गया और वे अपनी पुत्रवधू के पास आकर बोले कि पुत्री! तुम्हारी माता ने तुम्हारे साथ छल करके तुम्हारे चरु का सेवन कर लिया है। इसलिये अब तुम्हारी सन्तान ब्राह्मण होते हुये भी क्षत्रिय जैसा आचरण करेगी और तुम्हारी माता की सन्तान क्षत्रिय होकर भी ब्राह्मण जैसा आचरण करेगी। इस पर सत्यवती ने भृगु से विनती की कि आप आशीर्वाद दें कि मेरा पुत्र ब्राह्मण का ही आचरण करे, भले ही मेरा पौत्र क्षत्रिय जैसा आचरण करे। भृगु ने प्रसन्न होकर उसकी विनती स्वीकार कर ली। समय आने पर सत्यवती के गर्भ से जमदग्नि का जन्म हुआ। जमदग्नि अत्यन्त तेजस्वी थे। बड़े होने पर उनका विवाह प्रसेनजित की कन्या रेणुका से हुआ। रेणुका से उनके पाँच पुत्र हुए जिनके नाम थे

- रुक्मवान, सुखेण, वसु, विश्वानस और परशुराम।

पितामह भृगु द्वारा सम्पन्न नामकरण संस्कार के अनन्तर राम,जमदग्नि का पुत्र होने के कारण जामदग्न्य और शिवजी द्वारा प्रदत्त परशु धारण किये रहने के कारण वे परशुराम कहलाये। आरम्भिक शिक्षा महर्षि विश्वामित्र एवं ऋचीक के आश्रम में प्राप्त की। महर्षि ऋचीक से सारंग नामक दिव्य वैष्णव धनुष और ब्रह्मर्षि कश्यप से अविनाशी वैष्णव मन्त्र

प्राप्त किया।
तदनन्तर कैलाश गिरि पर स्थित भगवान शंकर के आश्रम में विद्या प्राप्त कर विशिष्ट दिव्यास्त्र विद्युदभि नामक परशु प्राप्त किया। शिवजी से उन्हें श्रीकृष्ण का त्रैलोक्य विजय कवच, स्तवराज स्तोत्र एवं दिव्य मन्त्र कल्पतरु भी प्राप्त हुए। चक्रतीर्थ में किये कठिन तप से प्रसन्न हो भगवान विष्णु ने उन्हें त्रेता में परशुरामावतार के रूप में कल्पान्त तपस्यारत भूलोक पर रहने का वर दिया।वे शस्त्रविद्या के महान गुरु थे। उन्होंने भीष्म, द्रोण व कर्ण को शस्त्रविद्या प्रदान की थी। उन्होंने एकादश छन्दयुक्त "शिव पंचचत्वारिंशत्नाम स्तोत्र" भी लिखा। वे पुरुषों के लिये आजीवन एक पत्नीव्रत के पक्षधर थे। भविष्य में कल्कि अवतार होने पर उनका गुरुपद ग्रहण कर उन्हें शस्त्रविद्या प्रदान करेंगे। परशुरामजी का उल्लेख रामायण, महाभारत, भागवत पराणु और कल्कि पुराण इत्यादि अनेक ग्रन्थों में किया गया है। वे ब्रह्मतेजस्वि और धृष्ट हैहय वंशी क्षत्रियों का पृथ्वी से २१ बार संहार करने के लिए प्रसिद्ध हैं। वे धरती पर वैदिक संस्कृति का प्रचार-प्रसार करना चाहते थे। कहा जाता है कि भारत के अधिकांश ग्राम उन्हीं के द्वारा बसाये गये। जिस मे कोंकण, गोवा एवं केरल का समावेश है।
पौराणिक कथा के अनुसार भगवान परशुराम ने तीर चला कर गुजरात से लेकर केरल तक समुद्र को पीछे धकेलते हुए नई भूमि का निर्माण किया। और इसी कारण कोंकण, गोवा और केरल मे भगवान परशुराम विशेष वंदनीय हैं। वे भार्गव गोत्र की सबसे आज्ञाकारी सन्तानों में से एक थे, जो सदैव अपने गुरुजनों और माता पिता की आज्ञा का पालन करते थे। वे एक ब्राह्मण के रूप में जन्में शस्त्र व शास्त्र में निष्णात थे। उन्हें भार्गव के नाम से भी जाना जाता है। यह भी ज्ञात है कि परशुराम ने अधिकांश विद्याएँ अपनी बाल्यावस्था में ही अपनी माता की शिक्षाओं से सीख ली थी। वे पशु-पक्षियों की भाषा भी समझते थे और उनसे बात कर सकते थे।
उन्होंने सैन्यशिक्षा केवल ब्राह्मणों को ही दी। लेकिन इसके कुछ अपवाद भी हैं जैसे भीष्म और कर्ण।

उनके प्रसिद्ध शिष्य भीष्म,द्रोण, एवं कर्ण।

कथानुसार हैहय वंशाधिपति कार्त्तवीर्य (सहस्त्रार्जुन) ने घोर तप द्वारा भगवान दत्तात्रेय को प्रसन्न कर एक सहस्र भुजाएँ तथा युद्ध में किसी से परास्त न होने का वर पाया था। संयोगवश वन में आखेट करते वह जमदग्निमुनि के आश्रम जा पहुँचा और देवराज इन्द्र द्वारा उन्हें प्रदत्त कपिला कामधेनु की सहायता से हुए समस्त सैन्यदल के अद्भुत आतिथ्य सत्कार पर लोभवश जमदग्नि का वध करते हुए कामधेनु को बलपूर्वक

छीनकर ले गया। कुपित परशुराम ने फरसे के प्रहार से उसकी समस्त भुजाएँ काट डालीं व सिर को धड़ से पृथक् कर दिया। इसके बाद उन्होंने एक के बाद एक पूरे इक्कीस बार इस पृथ्वी से केवल दुष्ट क्षत्रियों का विनाश किया। उन्होंने हैहय वंशी क्षत्रियों के रुधिर से स्यमंत पंचक क्षेत्र (वर्तमान में रामहृद तीर्थ रामराय गांव ,जिला जींद, हरियाणा)के पाँच सरोवर भर दिये और पिता का श्राद्ध सहस्रार्जुन के पुत्रों के रक्त से किया। अन्त में महर्षि ऋचीक ने प्रकट होकर परशुराम को ऐसा घोर कृत्य करने से रोका। सप्तद्वीप युक्त पृथ्वी महर्षि कश्यप को दान कर दी। केवल इतना ही नहीं, उन्होंने देवराज इन्द्र के समक्ष अपने शस्त्र त्याग दिये और सागर द्वारा उच्छिष्ट भूभाग महेन्द्र पर्वत पर आश्रम बनाकर रहने लगे। ब्रह्मवैवर्त पुराण में कथानक मिलता है कि कैलाश स्थित भगवान शंकर के अन्त:पुर में प्रवेश करते समय गणेश जी द्वारा रोके जाने पर परशुराम ने बलपूर्वक अन्दर जाने की चेष्ठा की। तब गणपति ने उन्हें स्तम्भित कर दिया।कुपित परशुरामजी द्वारा किए गए फरसे के प्रहार से गणेश जी का एक दाँत टूट गया, जिससे वे एकदन्त कहलाये। उन्होंने त्रेतायुग में रामावतार के समय शिवजी का धनुष भंग होने पर आकाश-मार्ग द्वारा मिथिलापुरी पहुँच कर भगवान को पहचान लिया और अपनी कलाएं उन्हें सौंपकर स्वयं तप के लिए चले गये। रामचरित मानस की ये पंक्तियाँ साक्षी हैं-

"कह जय जय जय रघुकुलकेतू, भृगुपति गये वनहिं तप हेतू"। वाल्मीकि रामायण में वर्णित कथा के अनुसार दशरथनन्दन श्रीराम ने जमदग्नि कुमार परशुराम का पूजन किया ।

भीष्म द्वारा स्वीकार न किये जाने के कारण अंबा प्रतिशोध वश सहायता माँगने के लिये परशुराम के पास आयी। तब सहायता का आश्वासन देते हुए उन्होंने भीष्म को युद्ध के लिये ललकारा। उन दोनों के बीच २३ दिनों तक घमासान युद्ध चला। किन्तु अपने पिता द्वारा इच्छा मृत्यु के वरदान स्वरुप परशुराम उन्हें हरा न सके। परशुराम अपने जीवन भर की कमाई ब्राह्मणों को दान कर रहे थे, तब द्रोणाचार्य उनके पास पहुँचे। किन्तु दुर्भाग्यवश वे तब तक सब कुछ दान कर चुके थे। तब परशुराम ने दयाभाव से द्रोणचार्य से कोई भी अस्त्र-शस्त्र मांगने को कहा। तब चतुर द्रोणाचार्य ने कहा कि मैं आपके सभी अस्त्र शस्त्र मन्त्रों सहित चाहता हूँ । परशुरामजी ने कहा-"एवमस्तु!" अर्थात् ऐसा ही हो। इससे द्रोणाचार्य शस्त्र विद्या में निपुण हो गये।

परशुराम कर्ण के भी गुरु थे। उन्होने कर्ण को भी विभिन्न प्रकार कि अस्त्र शिक्षा

दी थी और ब्रह्मास्त्र चलाना भी सिखाया था। लेकिन कर्ण एक सूत का पुत्र था, फिर भी यह जानते हुए कि परशुराम केवल ब्राह्मणों को ही अपनी विद्या दान करते हैं, कर्ण ने छल करके परशुराम से विद्या लेने का प्रयास किया। परशुराम ने उसे ब्राह्मण समझ कर बहुत सी विद्यायें सिखायीं, लेकिन एक दिन जब परशुराम जी एक वृक्ष के नीचे कर्ण की गोदी में सर रखके सो रहे थे, तब एक भौंरा आकर कर्ण के पैर पर काटने लगा,अपने गुरुजी की नींद में कोई अवरोध न आये इसलिये कर्ण भौंरे को सहता रहा, भौंरा कर्ण के पैर को बुरी तरह काटे जा रहा था, भौरे के काटने के कारण कर्ण का खून बहने लगा। वो खून बहता हुआ परशुराम जी के पैरों तक जा पहुँचा। परशुराम जी की नींद खुल गयी और वे इस खून को तुरन्त पहचान गये कि यह खून तो किसी क्षत्रिय का ही हो सकता है जो इतनी देर तक बगैर उफ़ किये बहता रहा।उन्होंने कर्ण को यह श्राप दिया की उनका सिखाया हुआ सारा ज्ञान उसके किसी काम नहीं आएगा जब उसे उसकी सर्वाधिक आवश्यकता होगी। इसलिए जब कुरुक्षेत्र के युद्ध में कर्ण और अर्जुन आमने सामने होते ही सब शिक्षा भूल गया और अर्जुन द्वारा मारा गया। क्योंकि उस समय कर्ण को ब्रह्मास्त्र चलाने का ज्ञान ध्यान में ही नहीं रहा।

सारगर्भित तथ्य

* भगवान् ब्रह्मा के पुत्र महर्षि भृगु हुए।उनके पुत्र महर्षि ऋचीक थे।महर्षि ऋचीक के पुत्र महर्षि जमदग्नि और उनके पुत्र भगवान परशुरामजी हुए। इस तरह भृगुऋषि की चौथी पीढ़ी में भगवान परशुराम का अवतरण हुआ था।

* भगवान परशुरामजी की माता का नाम रेणुका था।दादी का नाम सत्यवतीदेवी था।सत्यवती जी और विश्वामित्र ऋषि सगे भाई बहन थे।सत्यवती पुत्र महर्षि जमदग्नि और गाधि पुत्र महर्षि विश्वामित्र का जन्म समकालिक था क्योंकि इन दोनों की उत्पत्ति के लिए ऋषि ऋचीक ने ही यज्ञ किया था। इस तरह महर्षि विश्वामित्र भगवान परशुरामजी के सगे मामा थे।

* वैशाखशुक्ल तृतीया को सायं काल पुनर्वसु नक्षत्र में

तुला लग्न और मिथुन के राहु में छः ग्रहोंकी उच्चावस्था में भगवान परशुराम उत्पन्न हुए थे।

*अत्रि और माता अनसूया को सभी जानते हैं।

भगवान ब्रह्मा के पुत्र और महर्षि भृगु के भाई हैं अत्रि जी।
महर्षि अत्रि के पुत्र चंद्र, उनके पुत्र बुध तथा बुध के पुत्र हैं पुरुरवा जिनकी पत्नी उर्वशी थीं। पुरुरवा के छः पुत्र थे। पांचवें पुत्र विजय की पीढ़ी में ग्यारहवीं पर गाधि उत्पन्न हुए जिनकी पुत्री सत्यवती और पुत्र विश्वामित्र थे।

* पुरुरवा के प्रथम पुत्र आयु की वंश परम्परा की १९वीं पीढ़ी में सहस्रार्जुन उत्पन्न हुआ था । इसके वृद्ध परदादा महिष्मान ने नर्मदा नदीके तट पर माहिष्मती नगरी बसायी थी जो आज ओंकारेश्वर से चालीस किलोमीटर पश्चिम में स्थितहै।यहीं रहकर अहिल्याबाई अपने राज्यका संचालन करती थीं।

* पुरुरवा के वंश से सम्बन्ध महर्षि विश्वामित्र और कार्तवीर्यार्जुन दोनों का है।

* सत्यवतीका हाथ मांगने जब महर्षि ऋचीक गए तब गाधि ने उनसे एक हजार श्यामकर्ण घोडों की मांग की।अपनी तपस्या से वरुणसे मांगकर महर्षि ने तुरंत गाधि को दिया।जीवन के अंत में अपनी तपस्या के बल से सत्यवती कौशिकी नदी बन गईं।उसी के तट पर विश्वामित्रने आश्रम बनाया।यह नदी नेपाल और भारत में बहती है।

* महर्षि अत्रि के तीन पुत्रों में एक दत्तात्रेय की आराधना कर अर्जुन ने उनसे एक हजार भुजाएं मांगी। एक विमान मांगा।पुरुषघातिनी शक्ति मांगी तथा अन्यान्य शस्त्रास्त्र मांगे।

* महर्षि जमदग्नि के अनेक आश्रम थे।नर्मदा नदी के जंगल वाले आश्रम में रहते समय सहस्रार्जुन सेनाके साथ गया।महर्षि ने उसे सेना के साथ भोजन कराया।जब उसे पता चला कि यह चमत्कार महर्षि की गाय कामधेनु का है तब वह उसे बलात् हर ले गया।भगवान परशुराम के चार ज्येष्ठ भ्राता भी थे पर किसी ने प्रतिकार नहीं किया।

* जब भगवान परशुराम आये और उन्हें स्थिति का पता चला तब उन्होंने भगवान शिव से प्राप्त शस्त्रास्त्रों का आह्वान किया और विद्युत्वेग से दौड़ते हुए सहस्रार्जुन को राजधानी के मुहाने पर घेर लिया। कल्पान्त रौद्र रूप, आकाश में चमकती विद्युत की तरह पिंगल जटाएं, सम्मुख चारों वेद, पीठ पर अक्षय तरकश,ॐ ध्वनि से गूंजता दिगन्त और प्रज्वलित सूर्य सी दहकती दो आंखें। गम्भीर नाद - अर्जुन!मैं भगवान शिव का शिष्य जामदग्न्य परशुराम तुझे युद्ध देता हूँ। इतना सुनते ही उधर से एक हजार भुजाओं से पांच सौ बाण एक साथ चल पड़े। भगवान परशुराम ने उन सभी को परशु में समाहित कर लिया। एक बार अभिमंत्रित परशु चला और एक हजार भुजाएं जमीन पर कट कर गिरीं और छिपकली की तरह नाचने लगीं।दूसरे ही क्षण सिर कबंध से अलग था।सेना स्तब्ध।तब तक एक दिव्यास्त्र निकला और सत्तरह अक्षौहिणी सेना समाप्त।कामधेनु को प्रणाम कर सादर लेकर आश्रम लौट आये भृगुकुल सूर्य परशुराम।

* सहस्रार्जुन के पुत्रों ने घात लगा कर परशुराम की अनुपस्थिति में दोपहर हवन करते जमदग्नि को घेर कर यज्ञ मंडप में ही काट डाला।उनके साथ अर्जुनके २१ मित्र भी थे जिनमें कतिपय तो जमदग्नि ऋषि के सम्बन्धी भी थे।जब परशुराम जी लौट कर आये तो माता रेणुका ने २१ बार छाती पीटते हुए २१ अपराधियों का नाम बतलाया। भगवान परशुराम ने प्रतिज्ञा की इन २१ आततायियों के वंश का नाश करूँगा और वही विद्युत प्रवाह दौड़।अर्जुन के पुत्रों का बध।२१ जघन्य,नीच,दुष्ट राजाओं के बंश की खोज शुरू की भगवान परशुराम ने।

* १कश्मीर २ दरद ३ कुन्त ४ क्षुद्रक ५ मालव ६ शक ७ चेदि ८ काशी ९ करुष १० ऋषिक ११ क्रथ १२ कैशिक १३ अंग १४ बंग १५ कलिंग १६ मगध १७ कोसल १८ रात्रायन १९ वीति होत्र २० किरात मार्तिकावर्त(चित्ररथ)। इनको खोज कर मारने में वर्षों लग गए भगवान परशुराम को। चित्ररथ तो पहले भी दोषी था जमदग्नि महर्षि का।

* भगवान कृष्ण ने युधिष्ठिर से कहा-पार्थ!पराशर ऋषि ने अपने आश्रम में सौदासपुत्र सर्वकर्मा को छुपाया।

महर्षि गौतम ने दिविरथ के पुत्र को छुपा कर बचाया। गृद्ध कूट पर्वत पर छुप कर लंगूरों के बीच बृहद्रथ बचा।महाराज मरुत का पुत्र माता के साथ समुद्रतटवर्ती जंगलों में जा कर बचा।

* माता पृथ्वी के निवेदन पर कश्यप ऋषि के कहने पर भगवान परशुराम विरत हुए और सभी राजपुत्रों को कश्यप,गौतम,पराशर आदि ऋषियोंने पुनः राज्याभिषिक्त कर धर्म को संचालित किया।माता पिता की मृत्यु से आहत भगवान परशुराम शिव जी के पास गए। वहाँ गणपति ने मिलने से रोक दिया तब परशुराम जी का फरसा चला और गणपति एकदंत खो कर एकदंत बन गए। भगवान परशुराम ने समुद्र को पीछे धकेल कर अपने लिए केरल में जगह बना ली।वे कहते हैं--अन्याय का प्रतिकार करो और समुद्र से लेकर पृथ्वी पर धर्म की स्थापना करो। डरो मत लड़ो।उन्होंने विश्वामित्र के पौत्र का भी बध किया था क्योंकि उसने इनको कायर,जंगल में छुपकर रहने वाला कहा था।यह घटना आज से बहुत पहले सत्ययुग में घट चुकी है।इसमें एक ही प्रतिपाद्य है-
" धर्म के अनुसार यदि राजा राज्य न करे तो तपस्वी को भी मोर्चा खोलने का धार्मिक अधिकार है--

*ब्राह्मण त्रिषु वर्णेषु गृह्णन् शस्त्रं न दुष्यति।।

डॉ कामेश्वर उपाध्याय
(अखिल भारतीय विद्वत्परिषद)

हिंदू धर्म ग्रथों में कुछ महापुरुषों का वर्णन है जिन्हें आज भी अमर माना जाता है। इन्हें अष्टचिरजीवी भी कहा जाता है। इनमें से एक भगवान विष्णु के आवेशावतार परशुराम भी हैं-

अश्वत्थामा बलिव्यासो हनूमांश्च विभीषण।

कृप: परशुरामश्च सप्तैते चिरजीविन:।।

सप्तैतान् संस्मरेन्नित्यं मार्कण्डेयमथाष्टमम्।

जीवेद्वर्षशतं सोपि सर्वव्याधिविवर्जित:।।

इस श्लोक के अनुसार अश्वत्थामा, राजा बलि, महर्षि वेदव्यास, हनुमान, विभीषण, कृपाचार्य, भगवान परशुराम तथा ऋषि मार्कण्डेय अमर हैं।

ऐसी मान्यता है कि भगवान परशुराम वर्तमान समय में भी तपस्या में लीन हैं। इच्छित फल-प्रदाता परशुराम गायत्री है-

"ॐ जामदग्न्याय विद्महे महावीराय धीमहि, तन्नोपरशुराम: प्रचोदयात्।"

भगवान परशुराम व्रत

भगवान परशुराम जी की कृपा प्राप्त करने के लिए सवा साल या अधिक समय तक पूर्णिमा का व्रत किया जा सकता है। व्रत रखने वाला रामहृदतीर्थ अथवा अन्य तीर्थ पर स्नान करें। तथा भगवान परशुराम चालीसा, शतनामस्तोत्र ,आरती आदि जितना हो सके उतना करें।

"जय परशुराम जय सुखधाम" या परशुराम गायत्री का १०८ बार जप करें। परशुराम स्तोत्र का पाठ भी समयानुसार किया जा सकता है।

फलाहार/दुग्ध का सेवन दिन में ही करें।नमक का प्रयोग न करें। सूर्य और चंद्रमा दोनों को यथासमय जल दें। उद्यापन में ग्यारह ब्राह्मणों को भोजन,वस्त्र फलादि दान करें। यज्ञादि कराएं।

भगवान_श्री_परशुराम_साधना

श्रीपरशुरामस्तोत्रम्॥

श्रीपरशुरामम्मन्त्रो यथा मन्त्रमहार्णवे प्रतिपादितः –

“ॐ राँ राँ ॐ राँ राँ ॐ परशुहस्ताय नमः” इति मूलमन्त्रः।

अथपरशुरामगायत्रीमन्त्रस्तत्रैव यथा–

“ॐ जामदग्न्याय विद्महे महावीराय धीमहि। तन्न

परशुराम प्रचोदयात्” इति। ॐ जामदग्न्याय हृदयाय

नमः,ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा,ॐ महावीराय शिखायै वषट्,ॐ धीमहि कवचाय हुं, ॐ तन्नः परशुरामो नेत्रत्रयाय वौषट्,ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट्। इति

षडङ्गन्यासः। एवमेव करन्यासः।

सम्पूर्णा विलसन्ति
सोपनिषदो वेदोपवेदो पुरः।
पृष्ठे मार्गणपूर्णतूण-

विलसत्कोदण्डदण्डो महान्॥
बर्हिष्टोमकण्डलू च परशु पाण्योर्वहन् शास्त्रवित्।
शापे शास्त्रवरे च पेषलकरः श्रीभार्गवो भ्राजते॥

मत्तक्षत्रियकृत्तकण्ठविगलद्रक्तौघसम्प्लावितं
भक्ताऽनुग्रहणं कठोरपशुं धृत्वाऽवतीर्याऽधुना॥
दृप्तोद्दण्डदुरीहदुष्टदमनो दीनाऽऽवलीपालको
धर्मोद्धारधुरन्धरो भृगुवरो रामः समुज्जृम्भताम्॥

श्रीमद्रेणुकया धृतं स्वजठरे भूभारनाशाय यत्
श्रीमद्भार्गवजामदग्न्यमतुलं रामाभिधानं महः॥
दृप्यत्पार्थिववृन्दकाननलज्ज्वालाढ्यवैश्वानर
श्चण्डीप्राणपतिप्रियस्य परशोरादायि तत्संस्तुमः॥

लक्ष्मीपतेरुरसि रोषकषायिताक्षः
पादप्रहारमकरोन्मुनिपुङ्गवो यः॥
ब्रह्मर्षिवृन्दपरिचुम्बितपादपद्मः
स श्रीभृगुर्जयति
विप्रकुलप्रकाशः॥

श्रीमानुदारचरितो जयतादजस्रं
ब्रह्मर्षिसोमजमदग्निरिति प्रसिद्धः।
दृप्यन्नृपान्तकरणं तनयं प्रसूय
येनाऽखिलं जगदिदं परितो व्यरक्षि॥

सम्पूर्णभूमिगतवीरमहीगताना
मन्यायमाश्रितवतां प्रमदोद्धतानाम्।
सा कालरात्रिरिव नाशकरी समन्तात्
श्रीरेणुका भगवती विजयाय भूयात्॥

देवेन येन ततमस्ति समस्तमेत-
द्विश्वं स्वशक्तिखचितं स्वविलासरुपम्॥
तं त्वां महर्षिगणपूजितपादपद्मं
सर्वात्मना भृगुवरं शरणं भजामः॥

धर्मद्विषां नियमनाय गृहीतदीक्षं।
श्रीरेणुकाभगवतीजठरात्प्रसूतम्॥
श्रीभार्गवस्य जमदग्निमुनेः सुपुत्रं
रामं लसत्परशुपाणितलं नमामः॥

स्फूर्जन्मदोद्धतनृपावलिकाननाऽऽली-
र्दग्ध्वा,महीसुरगणान्परिरक्ष्य बन्धून्॥
त्रातं भुवस्तलमिदं भवता समस्तं
सम्प्राप्य खण्डपरशो: परशुं प्रसन्नात्॥

लोकत्रयाऽतुलपराक्रमजन्मभूमेः
शीर्षं निकृत्य कृतवीर्यसुताऽर्जुनस्य।
त्रिःसप्तवारमकरोर्वसुधां समस्तां
निःक्षत्रियां स्वपितृतर्पण्कामनायाः॥

दुर्नीतपार्थिवकदम्बनिकृत्तशीर्ष-
ग्रावद्रवद्रुधिरसिद्धधुनीजलौघैः॥
आकण्ठतो निजपितृन्परितर्प्य पश्चात्
प्रादाद् धरां वसुमतीं किल कश्यपाय॥

पाणौ विलोक्य परशुं भगवंस्त्वदीये
स्त्रीवेषभाग्दशरथोऽपि पलायितोऽभूत्॥
यः स्वासनार्धं उपवेश्य पुरन्दरेण
सम्मानितोऽभवदमोघबलेन शश्वत्॥

श्रीराम! भार्गव! भवच्चरणारविन्द-
मूलं शरण्यमधुना वयमागता: स्मः॥
कारुण्यपूर्णसुदृशा किल नोऽनुगृह्य
शक्तिं निजामनयनाशकरीं प्रदेहि॥

वाक्चातुरी चलति नो चतुराननस्य
यच्छिक्तवर्णनविधौ खलु तत्र केयम्॥
अस्माकमल्पविदुषां नृगिरा वराकी
शक्ता भवेत्तदपि नाथ! वरं प्रदेहि॥

वीरश्रीजामदग्न्यस्य पुण्यं स्तोत्रमिदं नराः
पठन्त्यनन्यमनसो येऽर्थबोधपुरस्सरम्॥
दुःशासनान्तकरणी भीमा धर्मप्रबोधिनी।
तेषां करगता शक्तिश्चकास्त्येव न संशयः॥

अङ्काष्टनन्दपृथिवीमितवैक्रमाब्दे
वैशाखशुक्लगिरिजादिवसे ग्रहेशे।
मार्तण्डतीर्थभवने जमदग्निपुत्र–
स्तोत्रं व्यधायि विदुषाऽमृत्वाग्भवेन॥

इति श्रीसर्वतन्त्रस्वतंत्र महामहिम-आचार्य
श्रीमदमृतवाग्भव-प्रणीतं श्री परशुरामस्तोत्रं।

#विधिन्यासपूर्वकजपाद् ब्रह्मतेजप्राप्तिर्भवतीति मे मतिः।

तंत्रोक्त चमत्कारिक मंत्र

ध्यानम्

सात्विकं श्वेतवर्णं च भस्मोद्धूलितविग्रहम्।
अग्निहोत्रस्थलासीनं नानामुनिगणावृतम्।।
कम्बासनमारूढं स्वर्णतारकुशांगुलिम्।
श्वेतवस्त्रद्वयोपेतं जुह्वन्तं राममाश्रये।।

ओम् अस्य मंत्रस्य भारद्वाज ऋषि: गायत्री छंद:
श्रीपरशुरामो देवता मनोकामना प्राप्तये जपे विनियोग:।

मंत्र

ॐ ब्रह्मक्षेत्राय विद्महे क्षत्रियान्ताय धिमहि तन्नो राम: प्रचोदयात्।

(इति)

भगवान् परशुराम जी ने मां राजराजेश्वरी त्रिपुर सुंदरी की उपासना से ही ब्रह्मतेज प्राप्त किया।और भगवान परशुरामजी ने परशुराम कल्पसूत्र की रचना की जिसमें देवी त्रिपुरा की महिमा एवं पूजा विधि का उल्लेख मिलता है। इसके साथ ही त्रिपुरा रहस्य माहात्म्यखंड में भगवान ने श्री दत्तात्रयजी से त्रिपुरादेवी चरित्र तथा आराधना विधि प्राप्त कर उसे सौ अध्यायों में निबद्ध किया है।

इस उपासना के बारे में अधिक जानकारी के लिए
लेखक से सम्पर्क कर सकते हैं।

आरती

जय परशुधारी,स्वामी जय परशुधारी।

भक्तजनों की तुम पर श्रद्धा है भारी।।

अजर अमर अविनाशी भक्तन दुख हारी।

भव भय भंजन जग में निशि दिन सुखकारी।।

जय परशुधारी-------------------१

ब्रह्मतेज तेजस्वी जप तप सदाचारी।

मातपिता के सेवक, बालब्रह्मचारी।।

जय परशुधारी----------------------२

तेरे चरण शरण में जो मन से आवै।

सुख सम्पत्ति धन दौलत बिन मांगे पावै।

जय परशुधारी-----++----------३

परशुरामजी की आरती जो कोई नर गावे।

मन इच्छा फल पावे सब दु:ख मिट जावे।

जय परशुधारी-------+++